

मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

टूटता हूँ, बिखरता हूँ, फिर खड़ा होता हूँ,
हूँ मे मुझसे हि बहेतर, यहि मैंने ठानी है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

हौ भले हि चुनौतिया पहाडोसी,
पर उन्हि पहाडो से नदीया जीत कि बहानी है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

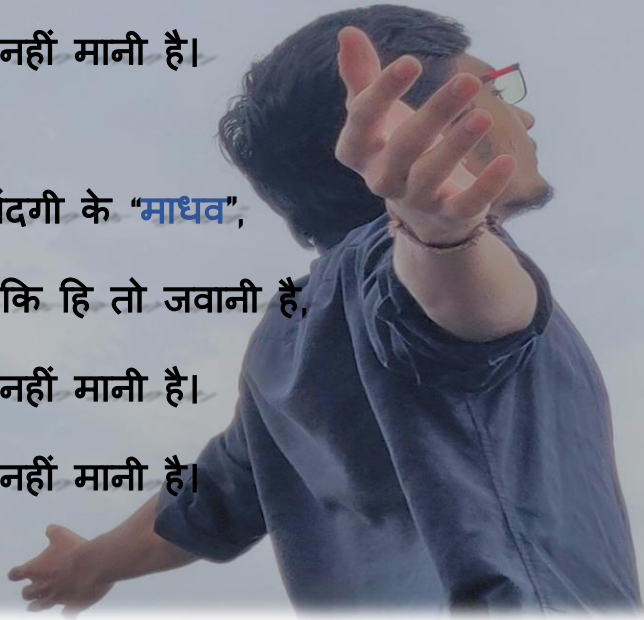
हौ भरी निराशाये मन में,
पर कोई कोने मे आग आशा कि होती हैं,
बस आग वहि तो जलानि है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

देखने दिन सफलता का एक,
ये राते कई बितानी है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

मिल जाये सब, बिना किये कुछ,
यह मात्र कल्पित एक कहानी है,
बात ये मैंने जानी है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

जा जिंदगी आजमा ले मुझे,
अगर दम अबभी तुझमे कई बाकि है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।

जीले हर पल जिंदगी के “माधव”,
आखिर दो दिन कि हि तो जवानी है,
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।
मैंने अबभी हार नहीं मानी है।



रचयिता :- मानव मांगुकिया

रचना :- मैंने अबभी हार नहीं मानी है। (हिन्दी)